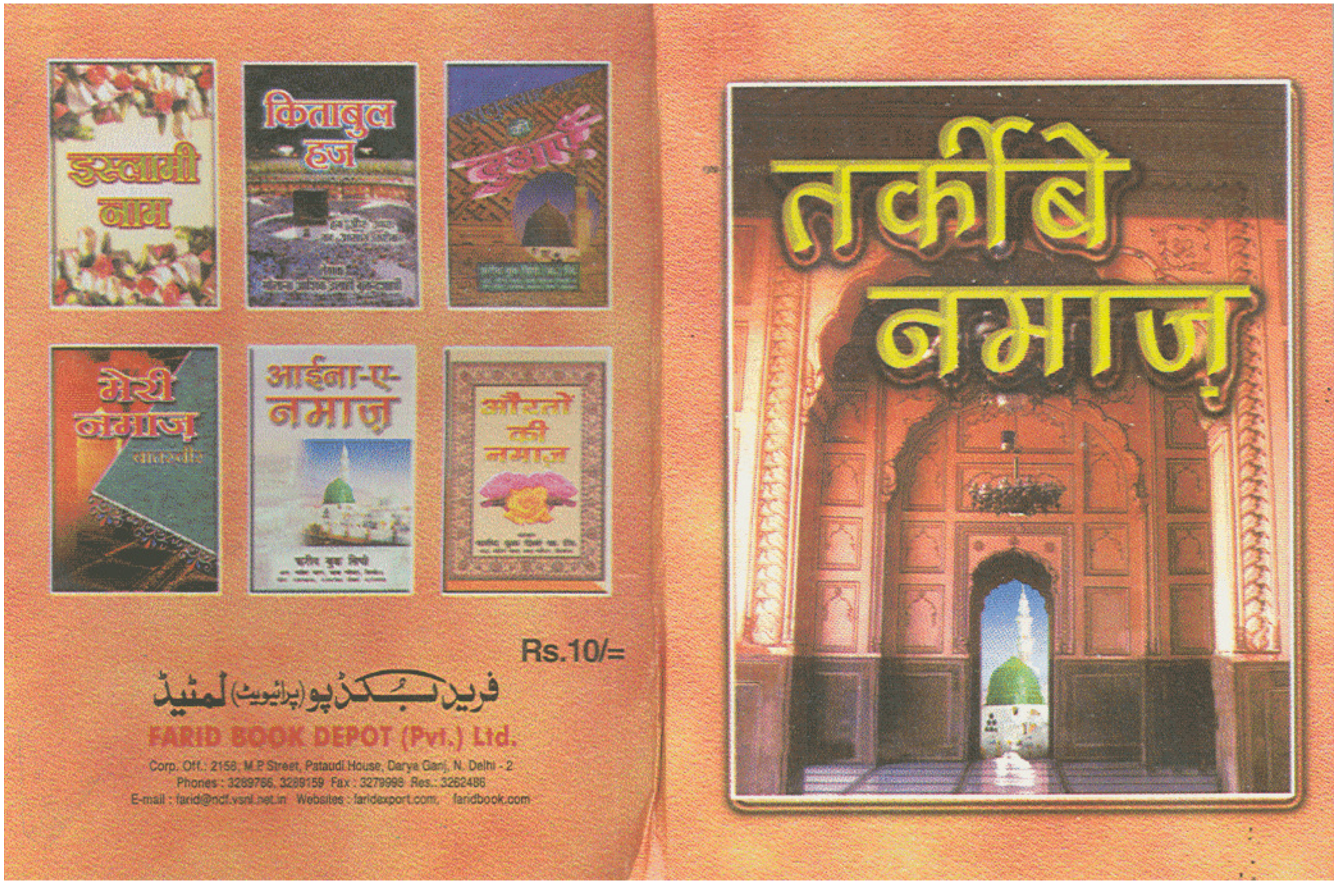

pdf by: umarkairanvi@gmail.com more books: islaminhindi.blogspot.in

بسم الله الرحمن الرحيم

तर्कीबे नमाज

हिंदी ज़ुबान में नमाज़ पर
सब से ज्यादा आसान और
मुकम्मल किताब

★ ★

بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

هٰذا من فضل ربي

विषय-सूची

क्या ?	कहां ?
१. नमाज़ की शर्तें	८
२. नीयत करने का तरीक़ा	१४
३. वाजिब नमाज़ की नीयत	१५
४. सुन्नत नमाज़ की नीयत	१५
५. वुज़ू (फ़र्ज़-वाजिब)	१६
६. वुज़ू की सुन्नतें	१७
७. वुज़ू के मुस्तहब-मक्रूह	१८
८. ग़ुस्ल-फ़र्ज़, सुन्नत	२०
९. नमाज़-नमाज़ के फ़र्ज़	२१
१०. नमाज़ के वाजिब	२२
११. तर्कीबे नमाज़	२६
१२. रुकूअ-क़ौमा	२९
१३. सज्दा	२९
१४. जल्सा	३०
१५. क़ादा	३२

क्या ?	कहां ?
१६. सलाम	३२
१७. तीन या चार रक्अत वाली नमाज़	३२
१८. क़ादा ऊला-क़ादा अख़ीरा	३४
१६. इमाम के पीछे नमाज़	३५
२०. जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए	३६
२१. मस्बूक़	३७
२२. जुमा	४२
२३. अज़ान	४५
२४. अज़ान के बाद की दुआ	४६
२५. सना	५१
२६. तअव्वुज़-तस्मिया	५२
२७. सूरः फ़ातिहा	५३
२८. सूरः काफ़िरून	५५
२६. सूरः इख़्लास	५६
३०. सूरः फ़लक़	५७
३१. सूरः नास	५८

क्या ?	कहां ?
३२. तक्बीर	६०
३३. तस्मीअ-तह्मीद-अत्तहीयात	६१
३४. दरूद शरीफ़	६४
३५. दुआ	६६
३६. सलाम	६७
३७. सलाम के बाद की दुआ	६७
३८. आयतुल कुर्सी	६८
३६. सूरः बक़रः का आख़िरी हिस्सा	७१
४०. तरावीह की नमाज़	७४
४१. वित्र	७७
४२. दुआ-ए-क़ुनूत	७७
४३. मुसाफ़िर की नमाज़	८०
४४. बीमार की नमाज़	८१
४५. आदाबे ईदैन	८२
४६. ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा	८४
४७. नफ़्ली नमाज़ें-तहज्जुद	८६

क्या ?	कहां ?
४८ इशराक़ और चाश्त की नमाज़	८६
४९ नमाज़ अव्वाबीन, हाजत की नमाज़	८७
५० नमाज़े तस्बीह	८९
५१ जनाज़े की नमाज़	९१
५२ दुआ बड़े के लिए, मर्द हो या औरत	९६
५३ दुआ लड़के के लिए	९८
५४ दुआ लड़की के लिए	९९
५५ क़ब्रस्तान में दाख़िल होने के दुआ	१००
५६ फ़ातिहा को तर्कीब	१०२
५७ शश कलिमात (छः कलिमे)	१०३

****

नमाज़

दिन-रात में पांच बार नमाज़ पढ़ना हर बालिग़ मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है। नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिससे किसी रसूल की शरीअत खाली नहीं रही। ख़ुदा की परस्तिश करने के तरीक़ों में मुसलमानों के यहां नमाज़ सब से अहम तरीक़ा है। ज़कात, रोज़ा हज और जिहाद सब इस के बाद आते ह। इसी लिए इस्लाम में नमाज़ की बहुत ज्यादा अहमियत है।

❋ नमाज़ की शर्तें ❋

नमाज़ के लिए कुछ शर्तें हैं, जिन को पूरा किए बग़ैर नमाज़ नहीं हो सकती। कुछ शर्तों का नमाज़ शुरू करने से पहले पूरा करना ज़रूरी है, जैसे वुज़ू और कुछ शर्तों का नमाज़ पढ़ते हुए ख़्याल रखा जाता है।

नमाज़ पढ़ने से पहले इन सात शर्तों का पूरा करना ज़रूरी है—

१. बदन पाक हो, २. कपड़े पाक हों, ३. नमाज़ पढ़ने की जगह पाक हो, ४. कपड़े पहन रखे हों यानी सतर छिपा रखा हो, ५. नमाज़ का वक़्त हो, ६. क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना, ७. नीयत करना यानी यह इरादा करना और ध्यान जमाना कि मैं फ़्लां नमाज़

पढ़ रहा हूं।

१. (क) बदन पाक करने के लिए, अगर नहाने की ज़रूरत हो तो नहा लीजिए या बदन पर गन्दगी लगी हो तो धो लीजिए।

ग़ुस्ल (नहाने) की तर्कीब यह है—

पहले पाक-साफ़ पानी लीजिए, फिर दोनों हाथ धोइए

इस्तिंजा कीजिए।

बदन पर से गन्दगी अगर लगी हो, तो धो डालिए, फिर वुज़ू कीजिए। अगर रोज़ा न हो, तो कुल्ली के साथ ग़रारा भी कीजिए, फिर सारे बदन पर तीन बार पानी डालिए। याद रखिए ग़ुस्ल में कुल्ली करना और बदन पर पानी डालना फ़र्ज़ है, इनके बग़ैर ग़ुस्ल

नहीं हो सकता।

(ख) बदन पाक करने के लिए अगर नहाने की ज़रूरत न हो तो सिर्फ़ वुज़ू कर लीजिए। वुज़ू की तर्कीब यह है—

सबसे पहले दोनों हाथ तीन बार धोइए। हरी टहनी की मिस्वाक से दांत साफ़ कीजिए। अगर मिस्वाक न हो तो ब्रुश से वरना दाहिने हाथ की बड़ी उंगली से दांत मलिए, फिर तीन बार कुल्ली कीजिए, तीन बार नाक में पानी डाल कर बाएं हाथ से नाक साफ़ कीजिए। फिर पूरे चेहरे पर तीन वार पानी डालिए। इसका ख़्याल रखिए कि पेशानी के बालों से ठोढ़ी के नीचे तक और कानों की कंपटियों तक कोई ज़रा सा बाल बराबर भी हिस्सा सूखा न रहे,

वरना वुज़ू न होगा, फिर दोनों हाथ कुहनी समेत तीन-तीन बार धोइए। अब नया पानी लेकर सर-कानों और गरदन का मसह कीजिए। आख़िर में दोनों पांव धोइए। पहले दाहिना, फिर बायां। वुज़ू करते वक़्त बातें नहीं करनी चाहिएं।

२. नमाज़ पढ़ने के लिए कपड़ों का पाक होना भी फ़र्ज़ है और अच्छा यह है कि कपड़े साफ़ हों, मैले न हों, बदबू न आती हो। आप हमेशा ख़्याल रखिए कि आपके साथ फ़रिश्ते भी रहते हैं, बदन की बदबू से, जैसे आप के साथी इंसानों को तक्लीफ़ होती है उसी तरह फ़रिश्तों को भी तक्लीफ़ होती है।

३. नमाज़ पढ़ने की जगह पाक होनी चाहिए। ज़मीन पर कोई पाक

कपड़ा बिछा लीजिए। गंदगी के पास या गंदी ज़मीन पर नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। सूखी ज़मीन पाक मानी जाती है। लान पर भी आप नमाज़ पढ़ सकते हैं।

४. नमाज़ के लिए मुनासिब कपड़े पहनना भी ज़रूरी हैं। मर्द के लिए नाफ़ से नीचे घुटने तक बदन का ढांकना फ़र्ज़ है और औरत के लिए हाथ-पांव और मुंह के अलावा सारा बदन ढांकना फ़र्ज़ है। जिस हिस्से का छिपाना फ़र्ज़ है, उसी को सतर कहते हैं।

५. नमाज़ का वक़्त भी नमाज़ पढ़ने के लिए ज़रूरी है, यानी जिस नमाज़ के लिए जो वक़्त रखा गया है, उसी वक़्त यह नमाज़ पढ़नी चाहिए, वक़्त से पहले पढ़ने से नमाज़ नहीं होगी

और दोबारा पढ़नी पड़ेगी। वक़्त के बाद नमाज़ क़ज़ा हो जाती है, जिसका सवाब वक़्त पर पढ़ी गयी नमाज़ के बराबर नहीं होता और वक़्त पर न पढ़ने का गुनाह भी होता है।

६. नमाज़ पढ़ते वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना भी लाज़िम है, भारत, पाकिस्तान से क़िब्ला पच्छिम की तरफ़ है। मुसलमानों का क़िब्ला खाना काबा शहर मक्का में है और मक्का मुकर्रमा अरब में है।

७. मुसलमानों की तमाम इबादतों की तरह नमाज़ में भी नीयत करना फ़र्ज़ है। अगर आप नीयत किए बग़ैर नमाज़ पढ़ लेंगे, तो नमाज़ न होगी और उस नमाज़ को दोहराना भी आप के लिए लाज़िमी होगा। मक़सद यह है कि

आप के ज़ेहन में यह बात साफ़ हो कि आप किस वक़्त की कौन-सी, कितनी रकअतों वाली और किस के लिए नमाज़ पढ़ रहे हैं, जैसे, पांच फ़र्ज़ नमाज़ों में नीचे लिखी हुई बात आप के ज़ेहन और ध्यान में हो, ज़ुबान से अदा करना ज़रूरी नहीं है—

फ़ज्र—मैं नीयत करता हूं दो रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ फ़ज्र, वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

ज़ुहर—मैं नीयत करता हूं चार रक्अत नमाज फ़र्ज ज़ुहर, वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

अस्र—मैं नीयत करता हूं चार रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ अस्र वास्ते अल्लाह। के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

मग़रिब—मैं नीयत करता हूं तीन रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ मग़रिब, वास्ते

अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

इशा—मैं नीयत करता हूं चार रक्अत नमाज़ फ़र्ज़ इशा, वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

वाजिब नमाज़ के लिए

नीयत—मैं नीयत करता हूं, तीन रक्अत नमाज़ वित्र वाजिब वास्ते अल्लाह के, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

दिन-रात में सिर्फ़ तीन रक्अत वित्र वाजिब हैं, जो इशा के बाद पढ़े जाते हैं। अगर आप जमाअत से नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो आप के ज़ेहन में यह भी होना चाहिए कि मैं इस इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूं।

सुन्नत नमाज़ की

नीयत—मैं नीयत करता हूं २।४रक्-अत नामज़ सुन्नत, वक़्त फ़ज्र। ज़ुह्र। अस्र। मग़रिब। इशा, वास्ते अल्लाह के मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़।

सुन्नत नमाज़ ही की तरह नफ़्ल नमाज़ की नीयत भी की जाती है, सिर्फ़ नमाज़ सुन्नत के बजाए नमाज़ नफ़्ल कहा जाता है।

वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ में कुछ काम फ़र्ज़ हैं, कुछ वाजिब, कुछ सुन्नत और कुछ मुस्तहब। कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिनको वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ में नहीं करना चाहिए, ये मक्रूह कहलाती हैं। हम इन कामों और चीज़ों को अलग-अलग लिख रहे हैं—

वुज़ू

फ़र्ज़

☐ एक बार अच्छी तरह हर उज़्व (अंग) का धोना,

☐ पूरा चेहरा धोना,

☐ दोनों हाथ कुहनियों समेत धोना,

☐ टख़नों समेत दोनों पांव धोना,

☐ चौथाई सर का मसह करना,

वाजिब

अंगूठी या छल्ला अगर तंग हो तो उसको घुमाना ताकि पानी उसके नीचे पहुंच जाए

सुन्नत

☐ नीयत करना,

☐ बिस्मिल्लाह पढ़ना,

☐ तीन बार दोनों हाथ गट्टों तक धोना,

☐ तीन बार कुल्ली करना,

☐ तीन बार नाक में पानी डालना,

☐ सर का मसह करना,

☐ दाढ़ी में खलाल करना, (ताकि कोई बाल सूखा न रह जाए)

☐ उंगलियों का खलाल करना,

☐ कानों का मसह करना,

☐ हर उज़्व को तीन बार धोना,

☐ धोते वक़्त हाथ से मलना,

☐ तर्तीब से वुज़ू करना,

☐ लगातार करना, यानी धोने में इतनी देर न करना कि जो उज़्व पहले धो लिया जा चुका है, वह सूख जाए।

मुस्तहब

☐ दाएं जानिब से शुरू करना,

☐ गरदन पर मसह करना,

☐ नमाज़ के वक़्त से पहले वुज़ू करना,

☐ क़िब्ले की तरफ़ रुख कर के बैठना,

☐ पाक और ऊंची जगह पर बैठ कर वुज़ू करना,

☐ दूसरे की मदद के बग़ैर खुद वुज़ू करना।

मकरूह

☐ वुज़ू करते वक़्त दुनिया की बातें करना,

☐ ज़्यादा पानी बहाना,

☐ नापाक जगह पर वुज़ू करना,

☐ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना,

☐ सुन्नत के खिलाफ़ वुज़ू करना,

☐ हर उज़्व को तीन बार से ज़्यादा धोना,

ग़ुस्ल

फ़र्ज़

☐ कुल्ली करना,
☐ नाक में पानी डालना,
☐ तमाम बदन पर पानी बहाना,

सुन्नत

☐ इरादा करना,
☐ दोनों हाथ का गट्टों तक धोना,
☐ इस्तिंजा करना,
☐ पहले वुज़ू कर लेना,
☐ तीन बार तमाम बदन पर पानी बहाना।

नमाज़

फ़र्ज़

नमाज़ शुरू करने से पहले—
☐ वुज़ू या ग़ुस्ल,
☐ पाक कपड़े,
☐ पाक जगह,
☐ सतर छिपाना,
☐ नमाज़ का वक़्त,
☐ क़िब्ले की तरफ़ रुख
☐ नीयत,

नमाज़ शुरू करते हुए—
☐ तक्बीरे तह्रीमा 'अल्लाहु अक्बर'

नमाज़ में—
☐ खड़े होना, क़िरात यानी क़ुर-

आन मजीद में से कुछ पढ़ना,

☐ रुकूअ,

☐ दोनों सज्दे,

☐ नमाज़ के आखिर में अत्तहीयात पढ़ने के लिए बैठना।

वाजिब

नमाज़ में--

☐ फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रक्अतों में क़िरात,

☐ फ़र्ज़ नमाज़ों की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा पढ़ना,

☐ फ़र्ज़ नमाज़ों की पहली दो रक्आतों में, वाजिब, सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद क़ुरआन मजीद की कोई आयत या सूरः पढ़ना,

☐ सूरः फ़ातिहा किसी और सूरः

से पहले पढ़ना,

☐ तर्तीब क़ायम रखना,

☐ रुकूअ कर के सीधा खड़ा होना,

☐ पहला सज्दा करके दूसरे सज्दे से पहले कुछ देर बैठना,

☐ नमाज़ आहिस्ता और अच्छी तरह अदा करना,

☐ दो रक्अत पढ़ कर अत्तहीयात के लिए बैठना।

नमाज के फ़र्ज़ों में से अगर कोई फ़र्ज़ छूट जाए तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी। अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए या फ़र्ज़ में देर या दोबारा हो जाए तो आखिर क़ादा में सज्दा सह्व करने से नमाज़ अदा हो जाएगी। अगर सज्दा सह्व करना भी याद न रहे, तो नमाज़ फिर पढ़नी होगी।

सज्दा सह्व की तर्कीब यह है कि नमाज़ की आख़िरी रक्अत में अत्तहीयात पढ़ कर दाईं तरफ़ सलाम फेर कर दो सज्दे कर लीजिए। सज्दे करने के बाद अत्तहीयात, दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ने के बाद सलाम फेर लीजिए। अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ कर भी सज्दा सह्व किया जा सकता है।

आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि दिन-रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, लेकिन फ़र्ज़ के अलावा पांच नमाज़ों के साथ पेहले या बाद में कुछ सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ी जाती हैं, जिनकी तफ़्सील आगे दी जा रही है।

	फ़ज्र	ज़ुहर	अस्र	मग़रिब	इशा
सुन्नत (फ़र्ज़ से पहले)	दो रक्अतें	चार रक्अतें	चार रक्अतें		चार रक्अतें
फ़र्ज़	दो रक्अतें	चार रक्अतें	चार रक्अतें	तीन रक्अतें	चार रक्अतें
सुन्नत (फ़र्ज़ के बाद)	फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सूरज निकलने तक कोई नमाज़ पढ़ना मकरूह है	दो रक्अतें	फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सूरज डूबने तक कोई नमाज़ पढ़ना मकरूह है	दो रक्अतें	दो रक्अतें
नफ़्ल		दो रक्अतें		दो रक्अतें	दो रक्अतें

इशा की नमाज़ के बाद यानी चार फ़र्ज़ और सुन्नतों और नफ़्लों के बाद तीन रक्अत वाजिब वित्र पढ़ी जाती है। फिर दो रक्आत नफ़्ल आख़िर में पढ़ना चाहिए। इस तरह इशा की नमाज़ में कुल सत्तरह रक्आत होती हैं।

तर्कीबे नमाज़

सबसे पहले वुज़ू कर लीजिए, या अगर गुस्ल की ज़रूरत हो, तो नहा लीजिए, अगर जमाअत का वक़्त हो, तो मस्जिद में जाकर इमाम साहब के पीछे नमाज़ पढ़िए, जमाअत से नमाज़ पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है। बेहतर यह है कि आप वुज़ू घर से करके जाएं, यह

अफ़ज़ल है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं। आप मस्जिद में जाकर भी वुज़ू कर सकते हैं। अगर आप अकेले नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो वुज़ू कीजिए, क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके खड़े हो जाइए, नमाज़ की नीयत कीजिए, ज़ुबान से नीयत अदा करना ज़रूरी नहीं, लेकिन अगर कह लें, तो बहुत अच्छा है, अब दोनों हाथ ऊपर उठाइए, हाथ खुले हुए हों, हथेलियां क़िब्ले की तरफ़ हों, उंगलियां सीधी हों, हाथ इतने ऊपर उठाइए कि दोनों हाथों के अंगूठे दोनों कानों की लौ के बराबर हो जाएं, फिर तक्बीर यानी अल्लाहु अक्बर कहते हुए दोनों हाथ नाफ़ के नीचे बांध लीजिए, बायां हाथ नीचे और उसके ऊपर दाहिना हाथ रख लीजिए। बायां हाथ खुला रखिए,

दाहिने हाथ की हथेली बाएं हाथ के गट्टे पर, तीन खुली हुई उंगलियां पहुंचे पर फैला कर रखिए, अंगूठे और छोटी उंगली का हल्का बना लीजिए।

अब तस्बीह 'सुब्हा-न-क……' पढ़िए। इसके बाद 'तअव्वुज़' (अअूज़ु बिल्लाह) और 'तस्मिया' (बिस्मिल्लाह) पढ़िए। फिर सूरः फ़ातिहा यानी 'अल्हम्दु लिल्लाह'……पढ़िए। इसके बाद कोई सूरः जैसे सूरः 'काफ़िरून' (क़ुल या ऐयुल काफ़िरून) पढ़िए।

सूरः के बाद तक्बीर कहते हुए रुकूअ के लिए झुकिए। (तस्बीह वग़ैरह की तफ़्सील आगे आ रही है।)

रुकूअ में दोनों हथेलियां घुटनों पर मज़बूती से रखिए। पिंडुलियां सीधी खड़ी कीजिए। दोनों कुहनियां भी सीधी

रखिए। कमर फैलाइए। सर को कमर के बराबर सीध में और नज़र पैरों के दर्मियान रखिए। अब तीन बार तस्बीह 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम' पढ़िए।

क़ौमा—फिर (समिअल्लाहु लिमन हमिदह) कहते हुए खड़े हो जाइए और 'रब्बना लकल हम्दु' कहिए।

सज्दा—फिर तक्बीर कहते हुए सज्दे के लिए झुकिए। पहले ज़मीन पर दोनों घुटने, फिर दोनों हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी रखिए। सज्दे में पेशानी, ज़मीन पर रखना लाज़िम है, वरना नमाज़ नहीं होगी। सज्दे में चेहरा दोनों हाथों के दर्मियान इस तरह रहे कि अंगूठे कानों की लौ की सीध में हों। हथेलियां खुली हुई हों, उंगलियां भी मामूल के

मुताबिक़ खुली हुई हों और सर की सीध में ज़मीन पर रखी हुई हों, कमर ऊंची उठी हुई, कुहनियां और रानें पेट से अलग रहें, पैरों के पूरे पंजे ज़मीन पर रखे हों। उंगलियों के सिरे क़िब्ले की तरफ़ मुड़े हुए हों। कम से कम एक पैर का अंगूठा ज़मीन से लगा रहना ज़रूरी है। अगर दोनों पैर ज़मीन से उठ गये तो नमाज नहीं होगी। सज्दे में तीन बार 'सुब्हा-न रब्बियल अअ्‌ला पढ़िए।

जल्सा—फिर तक्बीर कहते हुए दो ज़ानू बैठ जाइए। बैठने के लिए घुटने मोड़ कर दायां पांव खड़ा कर लीजिए और बायां पांव बिछा लीजिए। उंगलियां जहां तक हो सके, क़िब्ले की तरफ़ रहें। आधे मिनट यानी इत्मीनान

से बैठने के बाद दूसरा सज्दा कीजिए। तक्बीर कहते हुए सज्दे में जाइये और तीन बार फिर 'सुब्हा-न रब्बियल अअ्‌ला' पढ़िए। अब तक्बीर कहते हुए सीधे खड़े हो जाइए। अब सज्दे से उठने और खड़े होने की बेहतर सूरत यह है कि पहले पेशानी ज़मीन से उठाइए, फिर नाक, इस के बाद दोनों हाथ उठा कर घुटनों पर रखिए, फिर सीधे खड़े हो जाइए। अब आप की पहली रक्अत पूरी हो गयी। इसी तरह दूसरी रक्अत पूरी कीजिए।

दूसरी रक्अत—में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः पढ़िए, मगर यह ख्याल रखिए कि दूसरी रक्अत में पढ़ी जाने वाली सूरः पहली रक्अत की सूरः से बड़ी न हो।

क़ादा—दूसरे सज्दे के बाद बैठ जाइए और अत्तहीयात पढ़िए। अब अगर आपने दो रक्अत नमाज़ की नीयत की थी, तो अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ पढ़िए और इसके बाद दुआ 'अल्ला हुम-म इन्नी .....'

सलाम—फिर सलाम यानी 'अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह' कहते हुए दाहिनी तरफ़ मुंह मोड़िए, फिर दोबारा सलाम कहते हुए बाईं तरफ़ रुख कीजिए और दुआ पढ़िए, 'अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु......'

तीन या चार रक्अतों वाली नमाज़—अगर आपने तीन या चार रक्आत की नीयत की थी तो अत्तहीयात पढ़ कर तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। बिस्मिल्लाह पढ़िए

फिर सूरः फ़ातिहा पढ़िए। अगर आप फ़र्ज़ नमाज़ पढ रहे हैं, तो तीसरी और चौथी रक्अत में सिर्फ़ सूरः 'फ़ातिहा' पढ़िए, लेकिन अगर आप वाजिब या सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ पढ़ रहे हैं, तो सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः ज़रूर पढ़िए। सूरः के बाद रुकूअ और सज्दा कीजिए और जितनी रक्अतों की नीयत की थी, उसे पूरी करने के बाद सलाम फेर कर दुआ मांगिए।

याद रखिए—हर रक्अत में कुछ देर खड़ा होना, रुकूअ करना, दो सज्दे करना फ़र्ज़ है। पहली रक्अत में तक्बीरे तहरीमा के बाद सना, तअव्वुज़, तस्मिया, सूरः फ़ातिहा से पहले पढ़िए, दूसरी रक्अत में पहले बिस्मिल्ला ह आहिस्ता पढ़ी जाती है, फिर सूरः

फ़ातिहा और फिर कोई सूरः पढ़ी जाती है, सना और तअव्वुज़ नहीं पढ़ा जाता। दूसरी रक्अत में दो सज्दे करने के बाद अत्तहीयात पढ़ने के लिए बैठना ज़रूरी है। इस बैठने को 'क़ादा' कहते हैं। तीन या चार रक्अत वाली नमाज़ में दो 'क़ादे' होते हैं—

क़ादा ऊला—जो बीच में होता है यानी दो रक्अत के बाद तीसरी रक्अत से पहले—

क़ादा अखीरा—जो नमाज़ के आखिर में हो, जिसके बाद सलाम फेर दिया जाए।

यह भी याद रखिए कि क़ादा अख़ीरा, जिसके बाद सलाम फेरा जाए, फ़र्ज़ होता है। फ़र्ज़ों के अलावा वाजिब, सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ की हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः पढ़ी जाती है।

इमाम के पीछे नमाज़

जमाअत से नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा दुनिया में निराला है। यह एक ऐसा तरीक़ा है, जिस से हमारे मज़हब की शान ज़ाहिर होती है, अपने और बे-गाने सभी इससे असर लेते हैं।

दिन-रात में पांच फ़र्ज़ नमाज़ें जमाअत से पढ़ी जाती हैं। रमज़ानुल मुबारक के महीने में बीस रक्अतें तरावीह और तीन रक्अतें वित्र भी जमाअत के साथ पढ़ें जाते हैं।

जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए

१. नीयत करते वक़्त इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का इरादा भी किया जाता है, जैसे नीयत करता हूं दो रक्‌आत नमाज़ फ़र्ज़, वक़्त फ़ज्र, इमाम के पीछे, अल्लाह के वास्ते, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अक्बर......

२. सना, तअव्वुज़, तस्मिया के बाद सूरः फ़ातिहा और क़ुरआन मजीद की आयतें सिर्फ़ इमाम पढ़ता है। इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले सना पढ़ने के बाद ख़ामोश रहते हैं।

३. रुकूअ से खड़े होते वक़्त इमाम 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' कहता है, लेकिन मुक़्तदी सिर्फ़ 'रब्बना

लकल हम्द कहते हैं।

रुकूअ और सज्दों का तरीक़ा वही है। सज्दा करने के बाद आख़िरी रक्‌अत में अत्तहीयात के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ने पर ख़ामोश बैठे रहिए, और इमाम के साथ सलाम फेरिए।

मस्बूक़—एक या दो रक्‌अत के बाद जमाअत में शरीक होने वाला। जमाअत से नमाज़ पढ़ने के लिए आप मस्जिद में ऐसे वक़्त पहुंचे, जैसे अस्र की नमाज़ की एक या दो रक्‌अतें हो चुकी थीं, ऐसे वक़्त फ़ौरन वुज़ू करके इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने की नीयत कर के जमाअत में शरीक हो जाइए। वक़्त हो तो सना पढ़ लीजिए। आख़िरी रक्‌अत के क़ादे में आप सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़िए

ओर दरूद शरीफ़ न पढ़िए। खामोश बैठे हुए इमाम के सलाम का इन्तिज़ार कीजिए, जब इमाम सलाम फेर चुके तो आप तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। अब आप अपनी नमाज़ शुरू से पढ़िए यानी सना, तअव्वुज़ और तस्मिया पढ़िए। सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़ने के बाद रुकूअ और सज्दे कीजिए। अब अगर आप की दो रकअतें हो गई हैं तो सज्दे के बाद बैठ कर अत्तहीयात पढ़िए। अगर यह तीसरी रकअत है तो सज्दा के बाद खड़े हो जाइए और सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़िए और चार रकअतें पूरी करने के बाद अत्तहीयात और दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ कर सलाम फेर लीजिए।

जमाअत में शरीक होने के बाद जो इब्तिदाई रकअतें रह गयी थीं, उन

को खड़े होकर अदा किया जाता है, लेकिन अत्तहीयात के लिए अदा की गयी रकअतों का ख्याल रखा जाता है।

जैसे—जिस वक्त आप जमाअत में शरीक हुए, इमाम साहब अस्र की नमाज़ की तीन रकअतें पढ़ा चुके थे और चौथी रकअत में खड़े थे, आप तक्बीरे तहरीमा कह कर जमाअत में शरीक हो गये। इमाम के साथ रुकूअ व सज्दे किये। अब जमाअत की चार रकअतें पूरी हो चुकी थीं। इमाम ने सलाम फेरा, दाएं तरफ़ सलाम के वक्त आप बैठे रहिए, जब इमाम बाईं तरफ़ सलाम कहे तो आप तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। आप सना, तअव्वुज़, तस्मिया और फिर सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़ कर रुकूअ व सज्दे कीजिए।

अब आप की दो रकअतें पूरी हो गयीं, इस लिए आप बैठ कर अत्तहीयात पढ़िए। अत्तहीयात के बाद तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए। अब आप इस रकअत में सूरः फ़ातिहा के बाद आयतें भी पढ़िए, क्योंकि यह रकअत आप की वह दूसरी रकअत है, जो आपने इमाम के साथ नहीं पढ़ी थी। रुकूअ व सज्दे के बाद बैठिए नहीं, बल्कि खड़े होकर सिर्फ़ सूरः फ़ातिहा पढ़ कर रुकूअ व सज्दे कर लीजिए। आप की भी अब चार रकअतें पूरी हो गयीं, एक इमाम के साथ और तीन अकेले, इस लिए सज्दे के बाद अत्तहीयात, दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ कर सलाम फेरिए।

मग़रिब की जमाअत में आप को इमाम के साथ आख़िरी रकअत मिल

सकी है, तो आप इमाम के साथ रुकूअ और सज्दे करके क़ादे में सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़ कर खामोश बैठ जाइए। जब इमाम एक सलाम के बाद दूसरा सलाम फेरे, तो आप तक्बीर कहते हुए खड़े हो जाइए, और सना, तअव्वुज़, और तस्मिया और सूरः फ़ातिहा और आयतें पढ़ कर रुकूअ और सज्दे करके बैठ जाइए और सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़ कर तक्बीर कहते हुए तीसरी रकअत के लिए खड़े हो जाइए और इस रकअत में भी सूरः फ़ातिहा के साथ कोई सूरः पढ़िए और रुकूअ और सज्दे कर के अख़ीर क़ादे में अत्तहीयात, दरूद और दुआ पढ़ कर सलाम फेर लीजिए। इस तरह बग़ैर सूरः की एक रकअत तो इमाम के साथ हो गयी और दो रकअतें सूरः

फ़ातिहा और आयतों समेत आपने अदा कर ली।

नमाज़ के फ़र्ज़ों और शर्तों के खिलाफ़ तमाम चीजें नमाज़ तोड़ देती हैं, नमाज़में ज़ोर से खांसना, जम्हाई लेना और डकारें लेना मक्रूह है। मुनासिब और साफ़ कपड़े होने चाहिएं। ऐसे कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूह है, जिनको पहन कर आप किसी अच्छी महफ़िल में जाना पसन्द न करें।

नमाज़ पढ़ने वाले के सामने से न गुज़रिए, क्योंकि इससे नमाज़ पढ़ने वाले का ख्याल बटता है, जिसका गुनाह आप को होगा।

❋ जुमा ❋

जुमा के दिन ज़ुह्र के चार फ़र्ज़ों

के बजाए नमाज़ जुमा दोगाना अदा किया जाता है। जुमा की नमाज़ सिर्फ़ बड़ी मस्जिद में ही अदा की जा सकती है। हर मस्जिद में जुमा की नमाज़ पढ़ना मुनासिब नहीं। नमाज़ से पहले दो अज़ानें होती हैं। पहली अज़ान नमाज़ की अज़ान होती है। दूसरी अज़ान खुत्बे की।

पहली अज़ान के बाद आप सुन्नतें पढ़िए। खुत्बे की अज़ान के बाद फ़ौरन खुत्बा शुरू हो जाता है। खुत्बा पूरी तवज्जोह से सुनना चाहिए। कोई दूसरा काम करना या नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं, मना है। जुमा की नमाज़ के लिए ग़ुस्ल करना सुन्नत है। खुश्बू लगाना, पाक-साफ़ कपड़े पहनना मुस्त-हब है।

जब आप मस्जिद में या जामा मस्जिद में दाख़िल हों तो पहले बैठिए नहीं, बल्कि अगर सुन्नतें पढ़नी हैं तो फ़ौरन सुन्नतें पढ़नी शुरू कर दीजिए। इस तरह इन सुन्नतों का सवाब दोगुना होगा—एक उस वक़्त की सुन्नतों या नफ़्लों का और दूसरा तहीयतुल मस्जिद का, लेकिन अगर आप बैठ गये, फिर खड़े होकर सुन्नतें पढ़ने लगे, तो सिर्फ़ वक़्त की सुन्नतों या नफ़्लों का सवाब मिलेगा, तहीयतुल मस्जिद का सवाब नहीं मिलेगा, क्योंकि बैठ जाने के बाद तहीयतुल मस्जिद का वक़्त ख़त्म हो जाता है। अगर आपने वुज़ू भी किया था, फिर मस्जिद में दाख़िल होकर सुन्नतें पढ़नी शुरू कर दीं, तो आप को तीन सवाब मिल सकते हैं,

बशर्ते कि आप नीयत कर लें—

१. वक़्त की सुन्नतों या नफ़्लों का,
२. तहीयतुल वुज़ू का,
३. तहीयतुल मस्जिद का।-

'तहीयत' का मतलब आदाब के हैं, यानी वुज़ू और मस्जिद में दाख़िल होने का यह अदब है कि दोगाना नफ़्ल आप तहीयतुल मस्जिद या तहीयतुल वुज़ू की नीयत से अदा करें या उन सुन्नतों या नफ़्लों में, जो आप पढ़ें तहीयतुल वुज़ू और तहीयतुल मस्जिद की नीयत कर लें।

❋ अज़ान ❋

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ۚ أَشْهَدُ أَنَّ
مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰهِ ۚ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا
رَّسُولُ اللّٰهِ ۚ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ۚ حَيَّ
عَلَى الصَّلٰوةِ ۚ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ۚ حَيَّ
عَلَى الْفَلَاحِ ۚ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۚ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۚ
لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ ۚ

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है)

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है)

अश्हदु अल-ला इ ला-ह इल्ल-ल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं)

अश्हदु अल-ला इ ला-ह इल्लल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं)

अश्हदु अन-न मुहम्मदर-रसू-लुल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं)

अश्हदु अन-न मुहम्मदर रसू-लुल्लाह

(मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।)

हय-य अलस्सला:

(आओ नमाज़ पढ़ने के लिए)

हय-य अलस्सला:

(आओ नमाज़ पढ़ने के लिए)

हय-य अलल् फ़लाह

(आओ निजात पाने के लिए)

हय-य अलल फ़लाह

(आओ निजात पाने के लिए)

अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह बहुत बड़ा है, अल्लाह बहुत बड़ा है)

ला इला-ह इल्लल्लाह

(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं)

□ फ़ज्र की अज़ान में 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद यह बढ़ा दिया जाता है—

اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौमि

(नमाज़ नींद से बेहतर है)

अस्सलातु ख़ैरुम मिनन्नौमि

(नमाज़ नींद से बेहतर है)

□ जमाअत से पहले तक्बीर में 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद यह बढ़ाया जाता है—

قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ

क़द क़ा-म-तिस्सलात

(नमाज़ (की जमाअत) खड़ी हो गयी)

क़द क़ा-म-तिस्सलात

(नमाज़ (की जमाअत) खड़ी हो गयी)

अज़ान के बाद की दुआ

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ

التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ اٰتِ

مُحَمَّدَنِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ

وَالدَّرَجَۃَ الرَّفِیْعَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا

مَحْمُوْدَا الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا
شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ

अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद दअ्-वतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म-द-निल-वसी लत वल् फ़ज़ी-ल-त वद्द-र-ज तर्रफ़ी-अ-त वब्-असहु मक़ामम महमूद-निल-लज़ी व अ त्त हू वर्ज़ुक़ना शफ़ा अ-त-हू यौमल क़ियामति इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआदि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! ऐ परवरदिगार, इस पुकार के, जो मुकम्मल है और क़ायम होने वाली नमाज़ के हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वसीला और

फ़ज़ीलत और बुलंद दर्जा अता फ़रमा और उनको खड़ा कर मक़ामे महमूद में, जिसका तू ने उनसे वायदा किया है और हम को क़ियामत के दिन उनकी शफ़ाअत नसीब कर। बेशक तू वायदाखिलाफ़ी नहीं करता।

सना

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ
اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा न कल्लाहुम-म व बिहम्दि क व तबारकस्मु-क व तआला जद्दु-क व ला इला ह ग़ैरु क०

तर्जुमा—हम तेरी पाकी का इक़रार करते हैं, ऐ अल्लाह ! और

तेरी तारीफ़ करते हैं और बहुत बरकत वाला है तेरा नाम और बहुत बुलंद है तेरी बड़ाई और नहीं कोई माबूद तेरे सिवा।

तअव्वुज़

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

अअूज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम०

तर्जुमा—मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं शैतान मर्दूद से।

तस्मिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

तर्जुमा—शुरू करता हूं साथ नाम अल्लाह बख्शिश करने वाले मेहरबान के।

सूरः फातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا
الضَّآلِّيْنَ ۝ (اٰمين)

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अर्रहमानिर्रहीम० मालिकि यौमिद्दीनि० इय्या-क नअ्बुदु व इय्याक नस्तईन० इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम०सिरातल्लज़ी-न अन अ म-त अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन० (आमीन)

तर्जुमा—हर क़िस्म की सब तरीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जो पालने **वाला** है, तमाम जहानों का, बड़ा मेहर**बान**, निहायत रहम वाला, मालिक है बदले के दिन का। (ऐ अल्लाह!) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। हमको सीधा रास्ता बता, रास्ता उनका कि इनाम किया तूने उन पर, न उनका कि ग़ुस्सा किया गया उन पर और न गुमराहों का।

(इलाही क़ुबूल फ़रमा)

सूरः काफ़िरून

قُلْ يَاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ
مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ
مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

क़ुल या ऐयुहल काफ़िरून० ला अअ्बुदु० मा तअ्बुदून० व ला अन्तुम आबिदू-न मा अअ्बुदु० व ला अना आबिदुम मा अबत्तुम० व ला अन्तुम आबिदू-न मा अअ्बुद० लकुम दीनुकुम व लि-य दीन०

तर्जुमा—आप कहिए, ऐ मुन्किरो! मैं नहीं पूजता उस को, जिस को तुम पूजते हो और न तुम पूजते

हो उसकी, जिस को मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा उस को, जिस को तुमने पूजा और न तुम पूजते हो उस को, जिसको मैं पूजता हूं । तुम को तुम्हारी राह, मुझ को मेरी राह ।

सूरः इख़्लास

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ
الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ

कुल हुवल्लाहु अहद० अल्लाहुस्स-मद० लम यलिद व लम यूलद० व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद०

तर्जुमा—(ऐ नबी ! कह दीजिए कि वह (यानी) अल्लाह एक है । अल्लाह बे-नियाज़ है । न जना उसने किसी को और न वह जना गया और नहीं है उसके जोड़ का कोई ।

सूरः फ़लक़

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ
شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا
وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۚ

कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ि० मिन शर्रि मा ख लक़० व मिन शर्रि

ग़ासिक़िन इज़ा व क़ब० व मिन शर्रि-न्नफ़्फ़ासाति फ़िल अ़ुक़द० व मिन शर्रि **हासिदिन** इज़ा हसद०

तर्जुमा—कह दीजिए, मैं पनाह लेता हूं उसकी, जो पैदा करने वाला है सुबह का, शर से उन तमाम के जिनको पैदा किया (अल्लाह ने) और शर से अंधेरी रात के, जब वह आ जाए और शर से दम करने वालों के गिरोहों में और शर से हसद करने वाले के, जबकि हसद करे।

सूरः नास

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ
مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ
فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۧ

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिनासि० मलि-किन्नासि० इलाहिन्नासि० मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नासि० ल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि० मिनल जिन्नति वन्नास०

तर्जुमा—ऐ नबी कह दीजिए, मैं पनाह लेता हूं, रब से आदमियों के, जो बादशाह है सब आदमियों का, जो माबूद है सब इंसानों का, शर से वस्वसा डालने वाले के, जो पीछे हटने वाला है, जो कि वस्वसा डालता है दिलों में लोगों के, जिन्नों में से और इंसानों में से।

तक्बीर اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अक्बर

(अल्लाह बहुत बड़ा है)

रुकूअ -अब 'अल्लाहु अक्बर' कह कर रुकूअ कीजिए, यानी झुक जाइये हाथ की उंगलियों को मिला कर दोनों घुटनों पर मज़बूती से रख दीजिये, दोनों बांह बग़ल में ख़ूब मिला कर रखिये और दोनों पैर के टख़नों को भी मिला दीजिए, रुकूअ में नज़र अपने क़दमों पर रखिये और कम-से-कम तीन बार कहिए

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुब्हान रब्बियल अज़ीम०

(पाकी बयान करता हूं मैं अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग की)।

तस्मीअ

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअल्लाहु लिमन हामिदह

'अल्लाह ने उस बंदे की (बात) सुन ली, जिसने उसकी तारीफ़ की।'

तह्मीद

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

रब-ब-ना लकल हम्दु

(ऐ हमारे परवरदिगार ! तेरे लिए सब तारीफ़ है)

सज्दे की हालत में तस्बीह

सज्दे में तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى पढ़िए। 'सुब्हान रब्बियल आला'

(पाकी बयान करता हूं अपने परवरदिगार की।)

तशहहद या अत्तहीयात

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ
وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ
وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا
وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ○ اَشْهَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्स-लवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलै-क अय्यु-हन्नबीयु व रह्मतुल्लाहि व ब-र-कातुहू अस्सलामु अलैना व अला अिबा-दिल्लाहिस्सालिही न अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदुअन-न मुहम्म-

नद अब्दुहू व रसूलुहू०

तर्जुमा—तमाम इबादतें, जो जुबान के ज़रिए होती हैं, अल्लाह के लिए हैं और तमाम इबादतें जो बदन के ज़रिए होती हैं और तमाम इबादतें जो माल के ज़रिए होती हैं, (अल्लाह के लिए हैं।) सलाम हो आप पर ऐ नबी! और रहमत हो अल्लाह की और उसकी बरकतें। सलाम हो हम पर और बन्दों पर अल्लाह के, जो नेक हैं। मैं गवाही देता हूं कि नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के और गवाही देता हूं मैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ
مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्ला हुम-म सल्लि अला मुहम्म-दिव व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही म इन-न क हमीदुम मजीद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! रह-मत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद (सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और आल पर हज़रत मुहम्मद की, जैसे रहमत नाज़िल फ़रमाई तूने इब्राहीम पर और आलपर इब्राहीम की। बेशक तू तारीफ़ के लायक़, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्म-दिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन-न क हमीदुम मजीद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! बर-कत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद (सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और आल पर मुहम्मद की जैसी बरकत नाज़िल फ़रमायी तूने इब्राहीम पर और आल पर इब्राहीम की। बेशक तू तारीफ़ के लायक़, बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا
کَثِیْرًا وَّلَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ
فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ○

अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव-व ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़ि-र-तम मिन अिन्दिक वर्हम्नी इन्न-क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! बेशक ज़ुल्म किया मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म बहुत और नहीं बख़्शता है गुनाहों को मगर तू ही, पस बख़्श दे मेरे लिए बख़्शिश अपने पास से और रहम कर

मेरे ऊपर। बेशक तू ही है बहुत बख़्श देने वाला, बहुत मेहरबान है।

सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह (सलाम हो तुम पर और रहमत अल्लाह की)

सलाम के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ
وَمِنْكَ السَّلَامُ حَیِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا
دَارَ السَّلَامِ تَبَارَکْتَ یَاذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ

अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु व मिन-कस्सलामु हय्यिना रब्बना बिस्सलामि व अद्‌खिल्ना दारस्सलामि तबारक-त

या ज़ल जलालि वल इक्रामि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह! तू ही सलामती देने वाला और तेरी तरफ़ से है सलामती। ज़िदा रख हम को ऐ हमारे रब! सलामती के साथ और दाखिल कर हम को सलामती के घर, (यानी जन्नत में)। बहुत बरकत वाला है तू ऐ बड़ाई वाले और बुज़ुर्गी वाले।

आयतल कुर्सी

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ
الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ
مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ
یَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ

اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ
مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु ला ताख़ुज़ुहू सि-न-तुं व-व ला नौम लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यश्फ़अु अि न-द हू इल्ला बिइज़्निही यअ्लमु मा बै-न ऐ दीहिम व मा ख़ल्-फ़ हुम व ला युहीतू-न बिशैइम मिन अि़ल्मिही इल्ला बिमा शा-अ व सि-अ कुर्सी युहुस्समा-वाति वल् अर-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा व हुवल अलीयुल अज़ीम०

तर्जुमा—अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िंदा है, (दुनिया के कारख़ाने को) क़ायम रखने वाला, न उसको ऊंघ आती है और न नींद। उसी का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है। कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी जनाब में किसी की सिफ़ारिश करे, जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उनके पीछे है और लोग उसकी मालूमात में से किसी चीज़ पर एहाता नहीं कर सकते, मगर जितनी वह चाहे—और उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर हावी है और उनकी हिफ़ाज़त उसको थकाती नहीं और वह आलीशान, अज़मत वाला है।

सूरः बक़रः का आख़िरी हिस्सा

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۚ رَبَّنَا
لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ
وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۗ اَنْتَ مَوْلٰنَا
فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला तुस्अहा लहा मा क-स-बत व अलैहा मक्त स-बत रब्बना ला तुआ खिज़्ना इन नसीना औ अख्तअ्ना रब्बना व ला तह्मिल अलैना इस्रन कमा हमल्तहू अलल्लज़ी-न मिन क़ब्लिना रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ता-क़-त लना बिही वअ्फ़ु अन्ना वग़्फ़िर लना वर्हमना अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अलल क़ौमिल काफ़िरीन०

तर्जुमा—नहीं ज़िम्मेदारी डालता है अल्लाह किसी जान पर मगर जितनी उसकी ताक़त है, उसी को मिलता है जो कमाया और उसी पर पड़ता है जो किया। ऐ हमारे परवरदिगार! न पकड़ कर हमारी अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं। ऐ हमारे

रब! न रख हम पर भारी बोझ जैसा रखा था तूने उन पर जो हम से पहले थे। ऐ हमारे रब। न लाद हम पर वह जिसकी हममें ताक़त न हो और दरगुज़र फ़रमा हम से और बख़्श दे हम को और रहम फ़रमा हम पर, तू हमारा मालिक और आक़ा है। बस मदद फ़रमा हमारी उनके मुक़ाबले में जो मुंकिर हैं।

दुआ

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی
الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न तंव-व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तंव-व क़िना अज़ाबन्नारि०

तर्जुमा—ऐ रब ! दे मुझको नेकी दुनिया में और नेकी आख़िरत में और बचा हमको दोज़ख की आग से ।

तरावीह की नमाज़

रमज़ान के महीने में इशा के फ़र्ज़ और सुन्नतें पढ़ने के बाद बीस रक्अतें तरावीह की पढ़ना हर शख़्स के लिए सुन्नत है । जमाअत में दो-दो रक्अतें करके तरावीह पढ़नी चाहिएं । हर चार रक्अतों के बाद कुछ देर आराम करना, सुस्ता लेना चाहिए । इस बीच नीचे लिखी दुआ पढ़ते रहें । इस दुआ का नाम 'तस्बीहे तरावीह' है—

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ
ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظْمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ
وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَیِّ
الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ
رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا
مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ

सुब्हा-न ज़िल मुल्कि वल-म-ल-कूति सुब्हा-न ज़िल अिज़्ज़ति वल अज़्मति वल हैबति वल क़ुद्रति वल् किब्रियाइ वल-ज-ब रूति सुब्हानल-मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रू हि अल्लाहुम-म अजिर्ना मिनन्नारि या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु०

तर्जुमा—पाक है वह ज़मीन की बादशाही और आसमान की बादशाही वाला, पाक है वह इज्ज़त और बुज़ुर्गी और हैबत और क़ुदरत वाला और बड़ाई और दब्दबे वाला । पाक है बादशाह (हक़ीक़ी,) ज़िंदा, जो सोता नहीं और न मरेगा, बहुत पाक और बहुत ही मुक़द्दस हमारा परवरदिगार और फ़रिश्तों और रूह का परवरदिगार । ऐ अल्लाह ! हमको दोज़ख से पनाह दे, ऐ पनाह देने वाले ! ऐ पनाह देने वाले ! ऐ पनाह देने वाले !

तरावीह की बीस रक्अतों के बाद वित्र भी जमाअत से पढ़ने चाहिएं । अगर तरावीह की कुछ रक्अतें बाक़ी रह गयीं और वित्र के लिए जमाअत खड़ी हो गयी, तो तरावीह की बाक़ी

रक्अतें, जमाअत के साथ वित्र पढ़ने के बाद भी पढ़ी जा सकती हैं ।

तरावीह में पूरा क़ुरआन मजीद एक बार में ख़त्म करना सुन्नत है ।

वित्र—वाजिब हैं । इनकी तीनों रक्अतों में सूरः फ़ातिहा के बाद कोई सूरः पढ़ी जाती है । तीसरी रक्अत में सूरः पढ़ने के बाद तक्बीर कह कर दोनों हाथ कानों तक उठाइए और बांध कर दुआ-ए-क़ुनूत पढ़िए । दुआ-ए-क़ुनूत के बाद क़ायदे के मुताबिक़ रुकूअ व सज्दे करके नमाज़ पूरी कीजिए । सिर्फ़ रमज़ान के महीने में जमाअत के साथ वित्र पढ़े जाते हैं ।

दुआ-ए-क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ

وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِیْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ
وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
يَّفْجُرُكَ ؕ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّیْ
وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ
وَنَخْشٰی عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ؕ

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तअीनु-क व नस्तग़्फ़िरु-क व नुअ्‌ मि नु बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क व नुस्नी अलैकल खै-र व नश्कुरु-क व ला नक्फ़ुरु-क व नख़्लउ व नत्‌रुकु मंय्यफ़्जुरु-क अल्ला-हुम-म इय्या-क नअ़्बुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नस्‌आ व नह़्फ़िदु व नर्जू रह्म-त-क व नख़्शा अज़ा-ब-क इन-न अज़ा-ब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुल हि क०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से माफ़ी मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी तारीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी ना-शुक्री नहीं करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस शख़्स को, जो तेरी ना-फ़रमानी करे । ऐ अल्लाह ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते हैं और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते और हाज़िर होते हैं ख़िदमत के लिए और तेरी रहमत के उम्मीदवार हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं । बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलने नाला है ।

मुसाफ़िर की नमाज़

जो कोई शरीअत के हुक्म के मुताबिक़ मुसाफ़िर हो, वह जुह्र, अस्र और इशा की फ़र्ज़ नमाज़ दो रक्अतें पढ़े और सुन्नतों का यह हुक्म है कि अगर जल्दी हो तो फ़ज्र की सुन्नतों के सिवा और नमाज़ों की सुन्नतें छोड़ देना दुरुस्त है, इनके छोड़ देने से गुनाह न होगा और अगर जल्दी न हो, न अपने साथियों से रह जाने का डर हो, तो न छोड़िए और सफ़र में सुन्नतें पूरी-पूरी पढ़िए। उनमें कमी नहीं है। फ़ज्र और मग़्रिब और वित्र की नमाज़ में भी कोई कमी नहीं है। सफ़र का अन्दाज़ा ४८ मील या ७७ किलोमीटर है।

बीमार की नमाज़

नमाज़ किसी हालत में न छोड़िए। जब तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की ताक़त हो, खड़े होकर नमाज़ पढ़िए और जब खड़े न हो सकते हों, तो बैठ कर नमाज़ पढ़िए, बैठे-बैठे रुकूअ कर लीजिए और रुकूअ करके दोनों सज्दे कर लीजिए। रुकूअ के लिए इतना झुकिए कि कमर और सर बराबर हो जाएं। अगर रुकूअ-सज्दा करने की भी क़ुदरत न हो, तो रुकूअ और सज्दा को सर के इशारे से अदा कर सकते हैं। सज्दे के लिए रुकूअ से ज़्यादा सर झुकाना चाहिए। सज्दा करने के लिए तकिया वग़ैरह कोई ऊंची चीज़ रख लेना ना-जायज़ है।

आदाबे ईदैन

ईदैन, (दोनों ईदों) की नमाज़ वाजिब है। ईदैन के दिन ईदगाह जाने से पहले मिस्वाक करना, गुस्ल करना सुन्नत है। खुश्बू लगाना, तौफ़ीक़ के मुताबिक़ अच्छे कपड़े पहनना, ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह जाने से पहले कुछ खा लेना और ईदुल अज़्हा के दिन नमाज़ से वापस आकर खाना मुस्तहब है। नमाज़ ईदगाह में जाकर पढ़ना और रास्ता बदल कर आना, पैदल जाना और रास्ते में—

'अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइ ला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द'

पढ़ते जाना चाहिए। यह तक्बीर

ईदुल फ़ित्र के दिन धीमी आवाज़ से और ईदुल अज़्हा के दिन ऊंची आवाज़ से पढ़नी चाहिए। ये तक्बीरें ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ की फ़ज्र की नमाज़ से तेरहवीं तारीख़ की अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ऊंची आवाज़ से कहनी चाहिएं। ईदुल अज़्हा की नमाज़ अदा करके क़ुर्बानी के लिए जानवर ज़िब्ह किये जाते हैं।

याद रखिए कि ईदैन की नमाज़ से पहले और बाद में ईदगाह में नफ़्ल नहीं पढ़े जाते, ईदुल फ़ित्र के दिन ईद-गाह जाने से पहले ग़नी (मालदार) के लिए सदक़ा-ए-फ़ित्र देना वाजिब है, फ़क़ीर पर वाजिब नहीं।

ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा

ईद की नमाज़ आबादी से बाहर खुले मैदान में जमाअत के साथ अदा करनी चाहिए। बूढ़े, कमज़ोर अगर शहर की बड़ी मस्जिद में पढ़ लें, तो भी दुरुस्त है। आप को चाहिए कि जब सफ़ें दुरुस्त हो जाएं और इमाम तक्बीरे तहरीमा कहे तो आप भी दोनों हाथ कानों तक उठा कर तक्बीरे तहरीमा 'अल्लाहु अक्बर' कह कर हाथ बांध लीजिए, फिर सना पढ़िए। इसके बाद तीन बार 'अल्लाहु अक्बर' कहिए और हर बार दोनों हाथ तक्बीरे तहरीमा की तरह कानों तक उठाइए, हर तक्बीर के बाद हाथ छोड़ दीजिए, मगर तीसरी तक्बीर के बाद हाथ फिर

बांध लीजिए और इमाम अऊज़ु और बिस्मिल्लाह पढ़ कर क़िरात शुरू करे और मुक़्तदी खामोशी से इमाम की क़िरात सुनें और इमाम की पैरवी में रुकूअ व सज्दे करें—रुकूअ व सुजूद के बाद खड़े होकर दूसरी रक्अत की क़िरात खामोशी के साथ सुनिए। क़िरात पूरी करने के बाद जब इमाम तक्बीर कहे तो आप भी इमाम के साथ धीमी आवाज़ में तक्बीरें कहते जाइए और तक्बीरों के दर्मियान दोनों हाथ खुले छोड़ दीजिए। तीसरी तक्बीर के बाद भी हाथ बांधने के बजाए खुले छोड़ दीजिए और चौथी तक्बीर पर रुकूअ में जाइए और क़ायदे के मुताबिक़ क़ौमा, सज्दा, जलसा और क़ादा के बाद दोनों तरफ़ सलाम फेर कर नमाज़ खत्म

कीजिए। ईदैन की नमाज़ के बाद खुत्वा पढ़ना और सुनना सुन्नत है।

नफ़्ली नमाज़ें

तहज्जुद की नमाज़

इस नमाज़ का वक़्त आधी रात के बाद सुबहे सादिक़ से पहले तक है। इस नमाज़ को दो-दो रक्अत करके चार रक्अत से बारह रक्अतों तक पढ़ना चाहिए। इस नमाज़ के फ़ायदे बे-अन्दाज़ा हैं। जहां तक मुम्किन हो, इसे छोड़ना न चाहिए। जो आयतें या सूरतें याद हों, पढ़ लिया करें, कोई सूरः या आयत इसके लिए खास नहीं है।

इशराक़ की नमाज़

जब सूरज ऊंचा हो जाए और

उसकी ज़र्दी दूर हो जाए, तो चार रक्अत नमाज़ इशराक़ पढ़ी जाती है।

नमाज़े ज़ुहा

यानी चाश्त की नमाज़, नौ-दस बजे के वक़्त आठ रक्अत नमाज़ नफ़्ल पढ़िए। ज़वाल बाद पढ़ें तो चार रक्अतें पढ़िए, इस को नमाज़े ज़वाल कहते हैं,

नमाज़ अव्वाबीन

मग़रिब की नमाज़ के बाद छः या बीस रक्अतें नफ़्ल पढ़े जाते हैं, इन का नाम सलातुल अव्वाबीन है, जिसका पढ़ना सवाब व बरकत की वजह है।

हाजत की नमाज़

यह नमाज़ रसूले अकरम सल्ल-लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अंधे को

सिखायी, वह आंखों में रोशनी वाले हो गये और उस्मान बिन हनीफ़ रज़ि० ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफ़त में एक शख़्स को सिखायी, जिस से उस की हाजत पूरी हो गयी। हुज़ूर सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका तरीक़ा यह बताया कि अच्छी तरह वुज़ू कीजिए और दो रक्अत नमाज़ पढ़ कर यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَسَّلُ
وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّیْ
تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰى رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰى لِیْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ

अल्लाहुम-म इन्नी असअलु-क व

अ-त-वस्सलु व अ-त-वज्जहु इलैक बिन-बीयि-क मुहम्मदिन नबी यिर्र ह्मति या रसूलल्लाहि इन्नी तवज्जह्तु बि-क इला रब्बी फ़ी हाजतीहाज़िही लितुक़्ज़ा ली अल्लाहुम-म फ़शफ़्फ़िअहु फ़ी-य०

हिस्नेहसीन में बहुत-सी हदीसों की रिवायत से यह हदीस नक़ल की गयी है।

नमाज़े तस्बीह

इसकी तर्कीब यह है कि 'अल्लाहु अक्बर' कह कर सना 'ला इला-ह ग़ैरु-क' तक पढ़िए, फिर—

सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर : १५ बार, फिर तअव्वुज़, तस्मिया, सूरः फ़ातिहा और कोई सूरः

पढ़ कर दस बार यही तस्बीह पढ़िए, फिर रुकूअ कीजिए, रुकूअ में यह तस्बीह दस बार पढ़िए, फिर रुकूअ से सर उठाइए और तस्मीअ व तह्मीद के बाद यह तस्बीह दस बार पढ़िए, फिर सज्दे में जाइए और दस बार पढ़िए, फिर सज्दे से सर उठा कर दस बार पढ़िए, फिर दूसरे सज्दे में जाइए और दस बार पढ़िए, इसी तरह चार रक्अत पढ़िए। हर रक्अत में ७५ बार तस्बीह पढ़ी जाती है और चार रक्अतों में इसकी गिनती तीन सौ बार होती है।

याद रखिए रुकूअ और सज्दों में 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम' 'सुब्हा-न रब्बियल आला' कहने के बाद ये तस्बीबात पढ़िए। इसकी पहली रक्अत में 'अल हाकुमुत्तकासुर', दूसरी में वल-

अस्र, तीसरी में सूरः काफ़िरून और चौथी में 'क़ुल हुवल्लाह' पढ़िए। अगर क़ुरआन का हाफ़िज़ हो, तो सूरः हदीद, सूरः हश्र, सूरः सफ़्फ़ और सूरः तग़ाबुन पढ़िए।

हर ग़ैर-मक्रूह वक़्त में यह नमाज़े तस्बीह पढ़ सकते हैं और बेहतर यह है कि ज़ुह्र से पहले पढ़िए। हो सके तो हर रोज़ पढ़िए, वरना महीने में एक बार, वरना साल में एक बार और यह भी न हो सके तो उम्र में एक बार पढ़िए।

जनाज़े की नमाज़

जनाज़े की नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ किफ़ाया है, यानी कुछ लोग अगर यह नमाज़ पढ़ लें, तो सब की नमाज़ अदा

हो जाती है, लेकिन अगर नोई न पढ़े तो सब गुनाहगार होते हैं।

नीयत—जनाजे की नमाज़ में जो दुआ पढ़ी जाती है, वह बच्चे के लिए अलग होती है और बड़े के लिए अलग। इसका ख्याल आप पहले ही से रखिए और जब आप नीयत यानी नमाज़े जनाज़ा का इरादा करें, तब ही ज़ेहन में फ़ैसला कर लीजिए कि नमाज़ बड़े की पढ़ रहे हैं या बच्चे की। अगर आप चाहें तो ये लफ़्ज़ कह सकते हैं—

'मैंने नीयत की कि अल्लाह तआला के लिए चार तक्बीर नमाज़े जनाज़ा अदा करूं। तारीफ़ अल्लाह तआला के लिए है और दरूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए और दुआ इस मय्यत के लिए,

इस इमाम के पीछे, काबा शरीफ़ की तरफ़ रुख करते हुए।'

तक्बीर—नीयत के बाद आप तक्बीरे तह्‌रीमा की तरह दोनों हाथ कानों और सर के बराबर तक उठा कर नाफ़ के नीचे क़ायदे के मुताबिक़ बांध लीजिए, फिर आप यह दुआ यानी सना पढ़िए—

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ
اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ
وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क व तबार-कस्मु-क व तआला जद्दु-क व जल-ल सनाउ-क व ला

इला-ह ग़ैरु-क

'इलाही ! तेरी पाकी (के साथ) और तेरी तारीफ़ के साथ (तुझे याद करता हूं) और बरकत वाला है तेरा नाम और तेरी शान बुलंद है और तेरी तारीफ़ बड़ी है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।'

सना के बाद इमाम अल्लाहु अक्बर कहे तो आप भी तक्बीर कहिए और दरूद शरीफ़ पढ़िए—

दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَسَلَّمْتَ وَبَارَكْتَ
وَرَحِمْتَ وَتَرَحَّمْتَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ

اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्म-दिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त व सल्लम-त व बारक-त व रहिम-त व तरह्हम-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन-न-क हमी-दुम मजीद०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और हज़रत मुहम्मद की आलपर रहमत भेज, जिसतरहतूने भेजी रहमत और सलाम भेजा और बरकत दी और मेहरबानी की और रहम किया हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर और आल पर हज़रत इब्राहीम की। बेशक तू तारीफ़ किया गया बुज़ुर्ग है।

दरूद शरीफ़ के बाद अल्लाहु अक्बर कहेंगे, आप भी तक्बीर कहिए और यह दुआ पढ़िए ।

दुआ बड़े के लिए

मर्द हो या औरत

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا
وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا
اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى
الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ
عَلَى الْاِيْمَانِ

अल्लाहुम-म म ग़्फ़िर लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-क-रिना

व उन्साना अल्लाहुम-म मन अह्यैं त हू मिन्ना फ़ अह्यिही अलल इस्लामि व मन तवफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़ तवफ़्फ़हू अलल ईमान०

तर्जुमा– ऐ अल्लाह ! बख़्श दे हमारे हर ज़िंदा को और हमारे हर मुर्दा को और हमारे हर हाज़िर को और हमारे हर ग़ैर-हाज़िर को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औरत को। ऐ अल्लाह ! तू हम में से जिस को ज़िंदा रखे, तो उस को इस्लाम पर ज़िंदा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उसको ईमान पर मौत दे ।

दुआ लड़के के लिए

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अल्लाहुम-मज-अलहु लना फ़-र-तंव-वज-अलहु लना अज्रंव-व ज़ुख़्रंव-वज् अलहु लना शाफ़िअंव-व मुश-फ़्फ़आ०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इस लड़के को हमारे लिए आगे पहुंच कर सामान करने वाला वना दे और इसको हमारे लिए अज्र (की वजह) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इसको हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वह जिसकी सिफ़ारिश मंज़ूर हो जाए।

दुआ लड़की के लिए

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

अल्लाहुम्मज-अलहा ल ना फ़-र-तंव-वज् अल हा लना अज्रंव-व ज़ुख़-रंव-व ज् अ ल हा लना शाफ़िअतंव-व मुशफ़्फ़अ:०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इस लड़की को हमारे लिए आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और हमारे लिए अज्र (की वजह) और वक़्त पर काम आने वाली बना और इसको हमारे लिए सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वह जिसकी सिफ़ारिश मंज़ूर हो जाए।

दुआ के बाद इमाम के साथ आप भी तक्बीर 'अल्लाहु अक्बर' कहिए, फिर इमाम के साथ-साथ सलाम फेर लीजिए।

याद रखिए—नमाज़े जनाज़ा के बाद और कोई दुआ नहीं होती। नमाज़े जनाज़ा खुद दुआ है, हां, क़ब्रस्तान में दाखिल हों, तो बेशक यह दुआ पढ़ लीजिए—

क़ब्रस्तान में दाखिल होने की दुआ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُوْرِ اَنْتُمْ لَنَا
سَلَفٌ وَنَحْنُ لَكُمْ تَبَعٌ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ

لَلَاحِقُوْنَ نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ
وَيَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ وَيَرْحَمُنَا اللّٰهُ
اِيَّانَا وَاِيَّاكُمْ

अस्सलामु अलैकुम या अह्लल क़ुबूरि अन्तुम लना स-ल-फ़ुं व व नह्नु लकुम त-ब-उं व इन्ना इन शाअल्लाहु बिकुम ल-लाहिक़ून नस्-अलुल्ला-ह लना व लकुमुल आफ़ि-य-त व यग़्फ़िरुल्ला हुल-ना व लकुम व यर्हमुनल्लाहु इय्याना व इय्या कुम०

तर्जुमा—तुम पर सलाम ऐ क़ब्रों वालो! तुम हम से पहले चले गये और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं और अगर अल्लाह ने चाहा तो हम

ज़रूर तुम्हारे साथ मिलने वाले हैं। हम अपने और तुम्हारे लिए खुदा से राहत मांगते हैं और अल्लाह हमें और तुम्हें बख्शे और रहमत करे अल्लाह हम पर और तुम पर।

मय्यत दफ़नाने के बाद क़ब्र पर किसी वक़्त भी फ़ातिहा पढ सकते हैं।

फ़ातिहा की तर्कीब यह है—

सबसे पहले तीन बार दरूद शरीफ़ पढ़िए।

फिर सूरः फ़ातिहा (यानी अल्-हम्दु लिल्लाह) तीन बार,

फिर सूरः इख़्लास (यानी क़ुल हुवल्लाह) बारह बार

फिर दरूद शरीफ़ तीन बार

(वक़्त की गुंजाइश के मुताबिक़, आप इसमें कमी या ज्यादती भी कर सकते हैं। मौक़ा हो तो पूरी सूरः मुल्क भी पढ़ लीजिए।)

अब यह दुआ पढ़िए—

'ऐ अल्लाह! जो कुछ मैंने पढ़ा है, उसको क़ुबूल फ़रमा और इसका सवाब इस क़ब्र वाले की रूह को बख़्श दे।

शश कलिमात

छः कलिमे

हर मुसलमान को छः कलिमे ज़रूर याद होने चाहिए, जो नीचे लिखे जाते हैं—

पहला कलिमा तैयब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदुअन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

तर्जुमा—मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ
اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हो-ल व ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०

तर्जुमा—पाक है अल्लाह और तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और नहीं कोई माबूद अल्लाह के सिवा और अल्लाह बहुत बड़ा है और गुनाहों से बचने की ताक़त और नेक काम करने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो आलीशान और अज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तौहीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
وَهُوَحَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُوالْجَلَالِ
وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हैयुल ला यमूतु अब-दन अ-ब-दा ज़ुल जलालि वल इक्रामि बियदिहिल ख़ैरि व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर०

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ़ है। वह ज़िंदा करता है और मारता है और वह हमेशा-हमेशा के लिए ज़िंदा है जो मरेगा नहीं। अज़मत और बुज़ुर्गी वाला है। बेहतरी उसी के हाथ में है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पांचवा कलिमा अस्तग़फ़ार

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَذْنَبْتُهٗ
عَمَدًا أَوْ خَطَأً سِرًّا أَوْ عَلَانِيَةً وَّأَتُوْبُ
إِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ أَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ
الَّذِيْ لَا أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ
وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

अस्तग़िफ़रुल्ला-ह रब्बी मिन कुल्लि ज़ंबिन अज़नबतुहू अ-म-दन औ ख़-त-अन सिर्रन औ अला नि-य-तंव-व अतूबु इलैहि मिनज़्ज़म्बिल-लज़ी अअ्लमु व मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी ला अअ्लमु इन-न-क अन-त अल्लामुल ग़ुयूबि व सत्ता-

रुल उयूबि व ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि व ला हौ-ल व ला क़ुव-व त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०

तर्जुमा—मैं अल्लाह से माफ़ी मांगता हूं जो मेरा परवरदिगार है, हर गुनाह से जो मैंने किया, जान-बूझ कर या भूल कर, छिपा कर या खुल्लम-खुल्ला और मैं तोबा करता हूं उसके हुज़ूर में, उस गुनह से जो मुझे मालूम है और उस गुनाह से जो मुझे मालूम नहीं। बेशक तू जानने वाला है छिपी बातों का और छिपाने वाला ऐबों का और बख़्शने वाला गुनाहों का और गुनाहों से बख़्शने की ताक़त और नेक काम करने की क़ूवत अल्लाह की तरफ़ से ही है, जो बड़ी अज़मत वाला है।

छठा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا
وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ
عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ
وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ
وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِيْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन अन उश्रि-क बि-क शैअंव-व अना अअ्लमु बिही व अस्तग़्फ़िरु-क लिमा ला अअ्लमु बिही तुब्तु अन्हु व तबर्रातु मिनल कुफ़्रि वश-शिर्कि वल किज़्बि वल

ग़ीबति वल बिद अ़ति वन्नमीमति वल फ़वाहिशि वल बुहतानि वल मआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु व अक़ूलु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि किसी चीज़ को तेरा शरीक बनाऊं और मुझे उस का इल्म हो और माफ़ी मांगता हूं तुझ से उस गुनाह से जिस का मुझे इल्म नहीं। मैंने उस से तौवा की और बे-ज़ार हुआ कुफ़्र से और शिर्क से और झूठ से और ग़ीबत से और बिद्अत से और चुग़ली से और बे-हयाई के कामों से और तोहमत लगाने से और हर क़िस्म की ना-फ़रमानियों से और मैं ईमान लाया और मैं कहता हूं कि

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

आखिरी बात—नमाज के सिलसिले में किसी वक़्त कोई शुब्हा हो या कोई बात समझ में न आये तो बेहतर यह है कि खुद अपने घर में किसी बड़े से पूछिए या क़रीबी मस्जिद के इमाम साहब से या किसी सनद-याफ़्ता आलिम से पूछिए।

إن الله مع الصبرين

pdf by: umarkairanvi@gmail.com more books: islaminhindi.blogspot.com